प्लियांशी मेला नाम...!

शलाका गायकवाड

हम वयस्क जब कभी छोटे बच्चों को पेन या फिर पेंसिल के साथ देखते हैं तो लगता है कि उन्हें कुछ लिखने के लिए कहें। हम यह बिलकुल भी नहीं सोचते कि बच्चे की लेखन के लिए किस हद तक तैयारी हो चुकी है। लेकिन जब वो नन्हा-सा, बच्चा कुछ लिखकर दिखाता है, तो हम झट-से कह देते हैं कि 'तुम्हें तो लिखना ही नहीं आता' या फिर बोलते हैं, 'ये क्या लिख दिया'। आम तौर पर हमारा यह भी अनुभव रहा है कि छोटे बच्चे पेन या पेंसिल, जो चीज़ दिखे, उसे उठाकर दीवार पर चलाने लगते हैं। यह देखकर हम उन्हें डाँटने-फटकारने लग जाते हैं, "लिखना तो कुछ नहीं आता, बस दीवार खराब कर रहे हो।" हम यह अनदेखा कर देते हैं कि बच्चा स्वतंत्र रूप से कुछ लिखने का प्रयास कर रहा है। बच्चों के लेखन के सम्बन्ध में एक अनुभव यहाँ साझा कर रही हूँ।

मैं हूँ प्रियांशी

प्रियांशी के बारे में जो भी कहूँ वो कम ही लगता है। प्रियांशी अपने मम्मी, पापा, भाई और बहनों के साथ होशंगाबाद यानी नर्मदापुरम ज़िले की बाबई तहसील के एक गाँव पनवासा में रहती है। प्रियांशी के पापा 8वीं कक्षा तक पढ़े हैं और अभी वे मिस्त्री का काम करते हैं, साथ ही, ऑटो रिक्शा चलाते हैं। उसकी माँ ने स्कूली शिक्षा ग्रहण नहीं की। वे एक गृहिणी हैं और कभी-कभी वे लोगों के खेत में धान लगाने के लिए जाती हैं। प्रियांशी की तीन बहनें हैं और एक भाई है। उसकी सबसे बड़ी बहन का नाम दुर्गा है, फिर है नीतू और उसकी छोटी बहन का नाम माही है। वह अपने मम्मी-पापा की तीसरी सन्तान है। चारों बहनों के बाद है प्रियांशी का छोटा भाई दिव्यांश, जो एक साल का है। प्रियांशी बहुत ही नटखट, चुलबुली और प्यारी है। वह किसी अंजान व्यक्ति से बात करने से बिलकुल नहीं डरती। वैसे वो बहुत ही कम बात करती है लेकिन उसकी आवाज़ बहुत ही मधुर और सुरीली है। उससे बात करूँ तो ऐसा लगता है कि पूरे दिन उससे ही बात करती रहूँ। वो खुद से होकर कोई भी बात शुरू नहीं करती, बस हमारे पूछे गए सवालों का जवाब देती है। प्रियांशी की हर एक बात मेरे मन को भाती है। भले ही वह कम बोलती है, मुझे उसके बोलने का

तरीका पसन्द है जिसके कारण मुझे उसके बारे में, उसके बोलने, पढ़ने, लिखने के तरीकों के बारे में जानने में दिलचस्पी हुई। जब भी मैं प्रियांशी से मिली, मैंने उसके लिखने के नए तरीके को देखा और उन तरीकों में एक सह-सम्बन्ध देखा। आईए, देखते हैं प्रियांशी का लिखने का यह सफर।

लिखने का सफर

कोविड-19 महामारी के चलते शालाएँ बन्द हो गई थीं। कोविड की पाबन्दियाँ हटने के साथ-साथ शैक्षिक गतिविधियों को पुनः व्यवस्थित करने का विचार करते हुए *एकलव्य* ने एक ऐसे स्थान की कल्पना की थी - जहाँ बच्चे 'करके सीखते हैं', 'पर्यावरण से सीखते हैं' और 'एक-दूसरे से भी सीखते हैं'। इस कल्पना को साकार करने के लिए कोविड के प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए गाँव में मोहल्ला लर्निंग सेंटर शुरू किए गए जिनके संचालन की ज़िम्मेदारी गाँव के ही किसी युवा को दी जाती है। ऐसा ही एक मोहल्ला लर्निंग सेंटर गाँव पनवासा में भी शुरू किया गया। इस सेंटर को विगत डेढ़-दो साल से संजना अहिरवार संचालित कर रही हैं। प्रियांशी संजना के चचेरे भाई की बेटी है। जब सेंटर शुरू हुआ था तब प्रियांशी लगभग ढाई बरस की रही होगी। यूँ तो वो उम्र के लिहाज़ से छोटी थी लेकिन फिर भी अपनी बड़ी बहनों के साथ सेंटर पर नियमित रूप से आने लगी थी। प्रियांशी केन्द्र के सभी बच्चों को देख-देखकर लिखना सीख रही है। जब मैंने उससे बात की तो उसने अपना नाम 'प्लियांशी' बताया। मैंने उससे पूछा, "क्या तुम्हें अपना नाम लिखना आता है?" उसने कहा, "हाँ, मुदे आता है।"

फिर उसने अपना नाम नोटबुक में लिखकर दिखाया। जब मैंने उसकी लिखावट देखी तो काफी अचम्भित हुई। मैंने उससे पूछा, "यह क्या लिखा

है, बेटा?" उसने बताया, "यह प्लियांशी लित्ता है।" मैंने फिर उससे पूछा, "क्या प्रियांशी ऐसे लिखते हैं?" उसने बड़े ही आत्मविश्वास से 'हाँ' बोला। उसका आत्मविश्वास देखकर में भौंचक्का रह गई। उसके लिखने के तरीके को देखकर मेरा मन बहुत खुश हुआ। मैं इस सोच में पड़ गई कि क्यों मैं अपना नाम किसी और तरीके से सोच नहीं पाती या लिख नहीं पाती। जो मैंने बचपन से पाठशाला में सीखा है, बस उसी तरीके से क्यों लिखती हूँ? क्यों मैंने अपनी सोच को एक बक्से के अन्दर ही समेटकर रखा है? क्यों मैंने अपने अनोखे लिखने के तरीके को परम्परागत पद्धति के नीचे दबाकर रखा है? क्यों मैं प्रियांशी की तरह अपना नाम अपने मन से नहीं लिख सकती? फिर ऐसे लगा कि हाँ, शायद मैंने भी अपने बचपन में कुछ इसी तरह से लिखा होगा। और शायद सभी बच्चे लिखने के शुरुआती दौर में ऐसे ही लिखते होंगे। लेकिन कभी किसी ने गौर नहीं किया होगा। लेकिन मेरी नज़र में यह सीखने का एक सबसे अच्छा मौका था जो मैं गँवाना नहीं चाहती थी। इसीलिए मैंने प्रियांशी के साथ अपनी बातचीत जारी रखी।

जैसे-जैसे उससे बात कर रही थी वैसे-वैसे मन में एक खुशी और चेहरे पर मुस्कान आ रही थी। उसने अपनी दोनों बहनों का नाम भी नोटबुक में लिखकर दिखाया। 'कौन-सा नाम नीतू है और कौन-सा दुर्गा' पूछने पर उसने झट-से उँगली रखकर दिखाया। फिर मैंने उसे 'आम' लिखने को कहा। उसने आम में 'अ' लिखा और उसके आगे अपनी अनोखी लिपि में 'म' लिखा। फिर मैंने उससे पूछा, "आपका मनपसन्द फल कौन-सा है?" उसने बताया, "अन्दूर।" मैंने पूछा, " 'अंगूर' लिखना आता है?" उसने 'हाँ' में जवाब दिया और अपनी

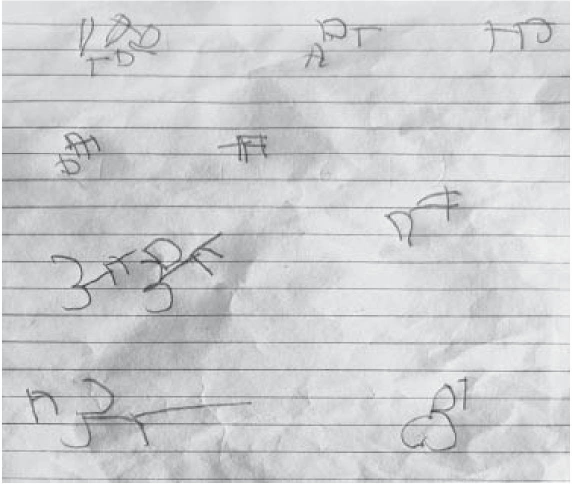

चित्र-1: प्रियांशी द्वारा लिखे हुए शब्द। (ऊपर बाएँ से) - प्रियांशी, पार्वती (माता का नाम), प्रकाश (पिता का नाम), दुर्गा, नीतू, कक्षा ३, आम, अंगूर।

नोटबुक में लिखकर दिखाया। इसमें भी वही हुआ जो 'आम' लिखने में हुआ था। उसने 'अंगूर' का 'अ' लिखा और उसके आगे अपनी अनोखी लिपि में 'गूर' लिखा। इससे यह समझ में आया कि वह बारहखड़ी में से 'अ' लिखना सीख गई है। फिर थोड़ी और बातचीत के बाद उसने अपने माता-पिता का नाम लिखकर दिखाया, वो भी अपनी अनोखी लिपि में। मैंने उससे उसकी कक्षा पूछी तो उसने एक सेकण्ड के भीतर 'तीसरी कक्षा' बोला और लिखकर भी दिखाया (हालाँकि उसका अभी शाला में नामांकन भी नहीं हुआ है)।

फिर मैंने सोचा, प्रियांशी को कुछ लिखकर देते हैं और फिर उसे देखकर लिखने को कहते हैं। मैंने उसे उसका और उसकी बहनों का नाम लिखकर दिया और कहा, "इसे देखकर लिखो।" उसने अपनी नोटबुक मुझसे ली और लिखने में जुट गई। वह बहुत ही एकाग्रता से लिख रही थी। मुझे लगा कि जैसा मैंने लिखकर दिया है, वह ठीक वैसा ही लिखेगी। इस बार भी उसने प्रियांशी, नीतू और दुर्गा अपनी अनोखी लिपि में ही लिखा था। यह देखकर फिर से मन खुश हुआ क्योंकि उसने अपने लिखने के तरीके को नहीं बदला।

सफर की सीढ़ियाँ

लगभग एक महीने बाद फिर प्रियांशी से मुलाकात हुई। इस बीच प्रियांशी का मोहल्ला गतिविधि केन्द्र पर आना कभी कम नहीं हुआ। वह रोज़ केन्द्र पर आकर, सभी बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की गतिविधि में जुड़ी रही। सेंटर का संचालन करने वाली संजना की शादी होने के बाद,

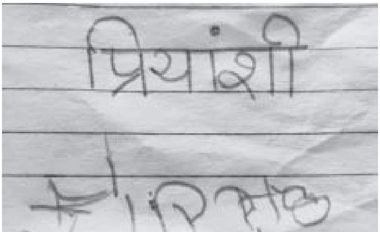

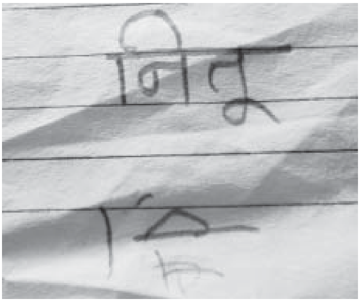

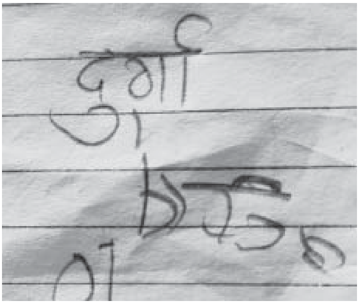

चित्र-2: *प्रियांशी को कुछ नाम लिखकर दिए गए जिन्हें देखकर उसे भी वे नाम लिखने थे। प्रियांशी ने वे नाम कुछ इस तरह लिखे।*

अब शिवानी इस केन्द्र को चलाने लगी थी। शिवानी ने प्रियांशी के साथ बातचीत की, उसे उसका और उसके माता-पिता का नाम हिन्दी में लिखना सिखाया। साथ ही, उसने अँग्रेज़ी के वर्ण भी प्रियांशी को सिखाए। प्रियांशी द्वारा हिन्दी भाषा के लिखने के तरीकों को देखकर यह समझ आया कि उसे स्वर और व्यंजन थोड़े-थोड़े लिखने आते हैं लेकिन जब मात्रा आती है तब वह गड़बड़ा जाती है। ऐसा शायद इसीलिए होगा क्योंकि उसके हाथ की माँसपेशियाँ अभी सध नहीं सकी हैं। अँग्रेज़ी भाषा में भी वह अपना नाम लिखना सीख रही है। लेकिन अँग्रेज़ी में वह कुछ वर्णों के मिरर इमेज लिख रही है, जैसे उसने अपने नाम में ‘s’ को उल्टा लिखा है। लेकिन जिस गति से वह लिखना सीख रही है, वह काबिल-ए-तारीफ है।

इस पूरे अनुभव को फिर से याद करती हूँ तो मुझे रमाकांत अग्निहोत्री जी की कही एक बात याद आती है जो उन्होंने *शैक्षिक संदर्भ* (अंक-28, जुलाई-अगस्त, 1999) में ‘बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता’ लेख में कही थी कि ‘सीखने की मुख्यतः दो शर्तें हैं - बच्चे की क्षमताओं पर आस्था व बच्चे के लिए रुचिकर वातावरण का निर्माण’ जो बिलकुल सही हैं। यदि हम बच्चों की क्षमताओं पर भरोसा नहीं रखेंगे तो हम उनके सीखने की प्रक्रिया को खारिज कर अपने तरीके उन पर थोपते रह जाएँगे। हम वयस्कों को उनकी क्षमताओं का इस्तेमाल कर, उन्हें आगे ले जाना होगा। साथ-ही-साथ उन्हें रुचिकर वातावरण देकर हम उनके साथ दोस्ती बढ़ा सकते हैं और फिर उन्हें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में जोड़ सकते हैं।

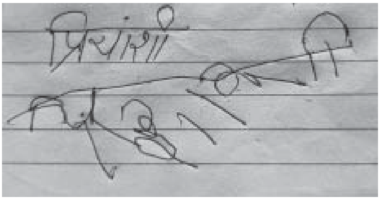

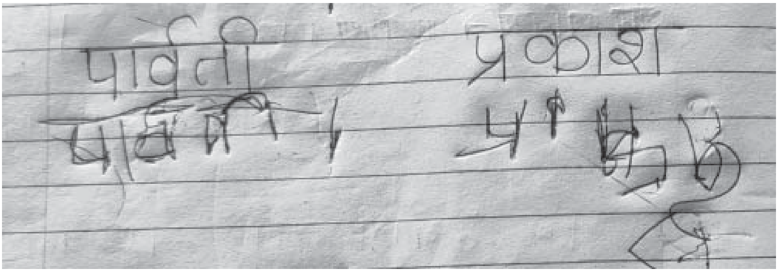

चित्र-3: प्रियांशी ने अपना और अपने माता-पिता का नाम लिखा।

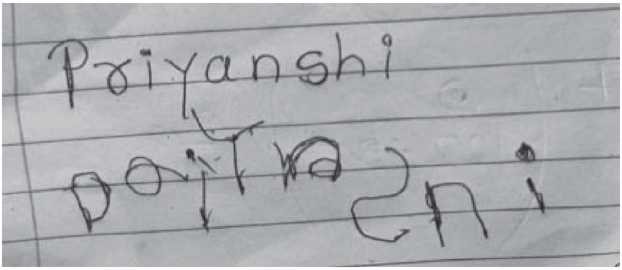

चित्र-4: प्रियांशी ने अँग्रेज़ी में अपना नाम लिखा।

आभार: यह अनुभव लिखने में शिखा, प्रदीप जी, ज़िया जी, रामभरोस जी और माधव जी ने मेरी मदद की है। मैं तहे-दिल से इन सभी का शुक्रिया अदा करती हूँ।

शलाका गायकवाड: *एकलव्य* की आश्रमशाला विज्ञान पहल, महाराष्ट्र में काम करने के बाद अब होशंगाबाद ज़िले के बाबई ब्लॉक में भाषा, गणित, विज्ञान और डिजिटल माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर काम कर रही हैं। बच्चों के साथ वक्त बिताना और उनसे जुड़े अनुभव लिखना पसन्द है। चित्रकारी और फोटोग्राफी में दिलचस्पी।

सभी फोटो: शलाका गायकवाड।

लकीरों से लिपि की ओर

आम तौर पर बच्चों के भाषा सीखने से यही आशय लगाया जाता है कि बच्चा बोलना, पढ़ना और लिखना सीख लेगा। ऐसा भी माना जाता है कि इसी क्रम में वो सीखेगा। लेकिन बच्चे इसी क्रम में भाषाई विकास करेंगे, ऐसा तय नहीं है। बच्चे पढ़ना और लिखना एक साथ भी सीख सकते हैं। इसी तरह भाषाई विकास के विविध चरणों में बच्चे कितना समय बिताएँगे, इसका भी कोई सामान्य गणित नहीं है। हर बच्चे के लिए यह अवधि फर्क हो सकती है।

यह सब सुनकर आपको अटपटा लग सकता है कि कुछ भी निश्चित नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है। क्या कोई बच्चा दो साल में और कोई बच्चा पाँच साल की उम्र में साक्षर हो सकता है? तो जवाब है 'शायद हाँ'। पिछले कुछ समय से एक नया परिप्रेक्ष्य प्रमुखता से चर्चा में है - इमरजेंट लिटरेसी या उभरती साक्षरता। इसके मुताबिक यदि बच्चों के आसपास पर्याप्त व सहज रूप से प्रिंट सामग्री मौजूद हो, बच्चे किसी को अखबार पढ़ते, किसी को कुछ गिनते, किसी को कुछ लिखते देख रहे हों तो वे भी किताब को सही

तरीके से पकड़ना, शब्दों को देखना, तस्वीरों को देखना, कहाँ से पढ़ना शुरू करना है, ऐसी कई बारीकियों को समझने लगते हैं। इसे भी पढ़ने-लिखने की शुरुआत के रूप में ही देखना चाहिए। इमरजेंट लिटरेसी पढ़ने-लिखने को सिर्फ अक्षरों-शब्दों को सही लिखने या सही उच्चारित करने से भी आगे जाकर देखती है।

चलिए, अपने मुद्दे पर लौटते हैं।

हम सबने बच्चों को आड़ी-तिरछी लकीरों को खींचने से लेकर किसी लिपि में कुछ अक्षर लिखते हुए देखा ही है। सुविधा के लिए हम इन्हें - लेखन पूर्व अवस्था, उभरती लेखन अवस्था, ट्रांज़िशन अवस्था और धारा प्रवाह लेखन अवस्था - जैसी विकासात्मक अवस्थाओं में बाँटकर देख सकते हैं। हालाँकि, बच्चों की ये क्षमताएँ उनकी मौखिक भाषा से भी जुड़ी हुई हैं।

प्रियांशी के अनुभव वाले लेख में हमारा सरोकार पहली दो अवस्थाओं से ज़्यादा है इसलिए इन अवस्थाओं के बारे में कुछ जानते हैं।

लेखन पूर्व अवस्था – इस अवस्था में बच्चे, उन्हें दिए गए चॉक, पेंसिल, क्रेयॉन, गेरू या कोयले के टुकड़े हथेली या अंगुलियों में पकड़कर कुछ आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचते हैं। कभी-कभी कुछ आकार भी बना लेते हैं। इसे गोदागादी या स्क्रिबलिंग (scribbling) भी कहा जाता है। इस अवस्था में बनाए आकारों या लकीरों के बारे में बच्चों से बातचीत ज़रूर करनी चाहिए कि उन्होंने क्या बनाया है या क्या बताना चाहते थे। हो सकता है जिसे हम बिना आकार मान रहे हैं, उसे बच्चा बताए कि ‘मैं खेल रहा हूँ’ या ‘मैं हँस रहा हूँ’ या ‘मैं खुश हूँ’। यानी लकीरें अपने आप में किसी आकार या उस दृश्य को भले ही न बता पा रही हों लेकिन बच्चा इनसे कुछ अभिव्यक्त करना चाहता था। कभी-कभी बच्चा जो स्क्रिबल करता है वो ऐसा भी लगता है कि मानो कोई लिपि लिखने का प्रयास कर रहा हो। कुछ अक्षर जैसे भी दिखेंगे, लेकिन हो सकता है कि बच्चे ने अक्षर लिखने का कोई प्रयास ही न किया हो।

उभरती लेखन अवस्था – इस अवस्था में बच्चों ने क्रेयॉन, पेंसिल आदि की मदद से उचित दबाव डालकर कागज़ पर लकीरें खींचना सीख लिया है। वे ध्वनियाँ सुनकर अक्षर बनाने की कोशिश करने लगते हैं, उन्हें कुछ अन्दाज़ा लगने लगता है कि अक्षरों को बाईं से दाहिनी ओर लिखते जाना है। उन्हें उनका नाम वगैरह लिखकर दिखाया जाए तो उसकी नकल करने की कोशिश भी कर लेते हैं। कभी-कभी बिना मात्राओं वाले हिन्दी शब्द बना लेते हैं। कुछ अक्षर मिरर इमेज जैसे भी हो सकते हैं।

इस अवस्था में भी बच्चों ने जो लकीरें खींची हैं, अक्षरों जैसा कुछ बनाया है, उस पर उनसे बातचीत कर लेना चाहिए। बच्चे बता पाते हैं कि उन्होंने क्या बनाया है या लिखा है। कभी-कभी इस अवस्था में बच्चे लिपि के साथ तो जूझ रहे होते हैं लेकिन चित्र थोड़े बेहतर बना पाते हैं। तो उनके बनाए आकार में चित्र और कुछ अक्षर भी शामिल हो जाते हैं। जैसे आप बच्चों को डॉग लिखने के लिए कहेंगे तो बहुत सम्भव है कि बच्चा कुत्ते जैसा कोई आकार बनाए और 'डी' अक्षर लिख दे। या फूल कहने पर कोई फूल जैसा आकार बनाए और 'फ' लिख दे।

शालाओं में या घर में बच्चे जल्दी-से भाषा को मानक लिपि में लिखने लगें, इस बात पर विशेष ज़ोर होता है। यानी बच्चों को जल्द-से-जल्द 'लिख्खड़' बना दिया जाए। इसलिए कई दफा लेखन-पूर्व अवस्था में बच्चों को ज़्यादा समय नहीं गुज़ारने दिया जाता या बच्चों की पर्याप्त तैयारी भी नहीं करवाई जाती है। इसी तरह इमरजेंट अवस्था में भी बच्चों को शब्दों की नकल की ओर ढकेला जाता है। इसके तहत अपना नाम, माँ का नाम, पिता का नाम, भाई-बहनों के नाम, शाला का नाम, गाँव-शहर का नाम जैसे शब्दों की नकल करवाई जाने लगती है।

यहाँ हमें यह समझना होगा कि किसी भाषा को लिखना, उस भाषा को बोलने के मुकाबले फर्क किस्म की दक्षता माँगता है। भाषा को जब लिपि में लिखते हैं तो उसके कुछ नियम होते हैं। जैसे शब्द अक्षरों से मिलकर बनते हैं, शब्दों को सटा-सटाकर नहीं लिखा जाता, थोड़ी जगह छोड़नी होती है, हिन्दी में सामान्य शब्दों के साथ मात्राएँ लगाने के मानक तरीके हैं। इसी तरह इंग्लिश में भी अक्षर कब कैपिटल होगा, इसका नियम है। इसलिए इनसे भी जूझना होता है। कई बार शब्दों के उच्चारण से पता नहीं चलता कि इसका प्रतिनिधि ध्वनि-अक्षर कौन-सा है। उदाहरण के लिए, (I MAD ORANJ RED AND YELO) इसमें बच्चा यह बताना चाह रहा है कि मैंने लाल और पीले रंगों से सन्तरा बनाया है। यहाँ आपने ध्यान दिया होगा कि बच्चे ने मेड, ऑरेंज, येलो की स्पेलिंग को अपनी ओर से गढ़ा है जो ध्वन्यात्मक रूप से असल स्पेलिंग के काफी करीब हैं। ऐसा ही उदाहरण प्रियांशी ने अपने नाम को जिस तरह हिन्दी में लिखा है, उसमें भी है।

लिपि तक पहुँचने की तैयारी

बच्चों की लेखन पूर्व व इमरजेंट राइटिंग की अवस्था काफी महत्वपूर्ण होती है। इसलिए इस अवस्था में बच्चों से ढेर सारा संवाद और मौखिक अभ्यास तो करवाना ही चाहिए ताकि बच्चा अक्षरों, शब्दों और उनकी ध्वनियों के

परस्पर सम्बन्ध को बेहतर तरीके से समझ सके। साथ ही, बच्चों से लेखन-पूर्व के अभ्यास भी करवाना चाहिए। यहाँ कुछ लेखन-पूर्व अभ्यास सुझाए जा रहे हैं।

भाषा के मौखिक और शब्द कार्ड, अक्षर कार्ड वाले अभ्यास के दौरान कार्ड से नाम बनाना, वाक्य बनाना जैसे अभ्यास करवाने चाहिए। देखा गया है कि बच्चे लेखन से पहले ही इन कार्डों से शब्द, छोटे वाक्य बनाकर खुद को अभिव्यक्त करने लगते हैं।

इसके अलावा कुछ गतिविधियाँ ऐसी हो सकती हैं जिनका सम्बन्ध सीधे-सीधे हाथ में चॉक, क्रेयॉन, पेंसिल लेने से ही हो। जैसे कागज़ पर मनचाहे चित्र बनाने और गोदा-गादी करने देना। कभी-कभी चित्रों या गोदागादी के लिए विषय भी दिए जा सकते हैं या आपकी सुनाई कोई कहानी-किस्से पर भी बच्चे चित्र बना सकते हैं। यदि अपने बनाए चित्र के नीचे बच्चे कुछ लिखना चाहें तो उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित कीजिए।

बच्चों को उनका नाम या उनके मनपसन्द जानवर या फल या फूल का नाम कंकड़ों से या बीजों से लिखने का मौका देना। एक-दूसरे की पीठ पर अंगुली की मदद से लिखना और क्या लिखा है इसे पहचानना, रेत पर अंगुली से लिखना आदि काम करवाए जा सकते हैं।

उपरोक्त गतिविधियाँ कुछ दिन करवाने के बाद बच्चों से उनका नाम, मनपसन्द जानवर, या फल या फूल के नाम कागज़ पर लिखने के लिए कह सकते हैं।

उपरोक्त में से कुछ तरीकों का इस्तेमाल *एकलव्य* फाउंडेशन अपने प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) और समुदाय आधारित शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में भी करता रहा है।

- माधव केलकर द्वारा विविध स्रोतों से संकलित

माधव केलकर: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।